सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में संवेदना के स्वर

ममता देवी
हिन्दी–विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

आधुनिक साहित्य में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाम से अनभिग कौन हो सकता है। वे तो साहित्य आकाश में चमकने वाला वो विशालकाय सितारा है जिसको रोशनी भूतल के बुद्धि जीवियों का मार्ग को रोशन करती है उनमें नूतन की प्रेरणा को उजागर करती है । युग कवि द्रष्टा भी होते हैं और सृष्टा भी होते हैं । क्योंकि वो समाज में जो देखते है अनुभव करते हैं वो ही अपनी रचनाओं में परोसते हैं । उसके नाटकों में भी संवेदना के स्वरों की मार्मिकता ह्रदय को भीतर तक छू जाती है ।

संवदेना का अर्थ :

संवेदना अनुभव मात्र है वह तो प्रत्यक्षीकृत अनुभवों का 'डिस्टिलड फार्म' हैं । संवेदना कभी शून्य में आकार ग्रहण नहीं करती है । युगबोध से अनिवार्यतः उसका करीबी रिश्ता रहता है । संवेदना के लिए आस–पास का परिवेश, उसकी हलचल और उस हलचल में व्यक्ति की स्थिति, परिस्थिति और मनस्थिति आधार का काम करती है।[1] सम्पूर्ण प्रकृति द्वारा पृथ्वी पर सुन्दरतम स्वरूप की संरचना की गई है । मानव प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है । मानवता के इस गुण के कारण समस्त प्राणी जगत एक सूत्र में बंधा है । ये भावनाओं का ऐसा जुड़ाव है जिससे कोई भी इन्कार नहीं कर सकता है । अनुभूति को शब्दों के मोती बनाकर जब कोई कलाकार रचना रचता है तो मानव ह्रदय उसे अछूता कैसे रह सकता है । अनुभव तो सभी करते हैं परन्तु अनुभवों को हर इन्सान अभिव्यक्त नही कर सकता है । अतः जो अनुभव व्यक्ति में घुलते हुए अनुभूति के रूप में छनकर आते हैं वे ही संवेदना की संज्ञा प्राप्त करते हैं।

संवेदना का विस्तार :

'सर्वेश्वर' जी के साहित्य में संवेदना का व्यास काफी चौड़ा है । इसके राग संवेदना के साथ–साथ समसामयिक संदर्भ, सांस्कृतिक मूल्य, मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ और राजनीतिक अनुभव की अनुभूति में ढ़लकर संवेदना के रूप धारण कर लेती है । सर्वेश्वर की साहित्य संवेदना बहुआयामी और बहुस्तरीय है । कलाकारों की संवेदना आम आदमी की तुलना अधिक सक्रिय, अधिक ग्रहणशील और अधिक विस्तृत होती है । इसी कारण जो कुछ भी कलाकारों की संवेदना में आता है । उसे वे इस ढंग से कहते हैं कि वह पाठकीय संवेदना बन जाता है लेखकीय संवेदना का पाठकीय संवेदना बन जाना न केवल बड़ी बात है । अपितु कलाकार की उल्लेख विशेषता भी है । कलाकार जब यथार्थ को वास्तविक रूप में देखता है तो उसे

[1]- डॉ० हरिचरण शर्मा, सर्वेश्वर का काव्य सृष्टि और दृष्टि, पृ० 119

न केवल देखता है अपितु भोगता और जीता भी है। वह यथार्थ का हिस्सा बन जाता है । ऐसा होने पर उसकी अभिव्यक्ति संवेदनात्मक हो पाती है ।[2]

युगबोध का प्रभाव :

संवेदना का युग की परिस्थितियों का भी प्रभाव दिखाई देता है । जब कलाकार यथार्थ को सामने रख अपनी अनुभूति को वास्तवकिता के आधार पर पन्नों पर उकेरता है। तो वह संवेदना का बहाव होता है । जो एक ऐसी नदी का रूप लिए होती है जो उसके ह्रदय की वेदनाओं से निकलकर मस्तिष्क के तार्किकता से लूप्त रहती है । उस समाज की वैसी ही छवि को उभारती है जैसी समाज के लोगों का जीवन और स्थिति होती है । इसमें समाज का अक्ष स्पष्टता के लिए रहता है । युग चेतना ही संवेदना को आधार प्रदान करती है । 'युग चेतना का अर्थ है मनुष्य के सामूहिक व्यवहार में परम्परा प्राप्त मूल्यों से भिन्न मूल्यों की प्रतिष्ठा' किसी काल–विशेष का मनुष्य सामान्य रूप से इस परिवर्तन को अनुभव तो करता है पर उसे स्पष्ट रूप से पहचान कर अभिव्यक्त नहीं कर पाता है । वह युग विशेष में अधिकांश लोगों के मन में प्रच्छन्न रूप से चलते रहने वाले जीवन लक्ष्यों और मूल्यों का बोध मात्र है । जो लोग इतिहास के जानकार होते हैं और सामाजिक व्यवहारों के परिवर्तनों की कार्य परम्परा को समझने की दृष्टि रखते हैं । वे उनके मूल रूप और कारण पर अनुसंधान करते हैं, जो लोग अधिक संवेदनशील होते हैं वे प्रत्येक युग की समस्या को अन्तर्बोध द्वारा ग्रहण करते हैं ।'[3]

सत्य की चोट बहुत गहारी होती है ।
इसी से सच्ची चोटें बांटता हूँ ।
......यदि दुर्बलता दर्प में बदल जाये
व्यथा अर्न्तदृष्टि दे
तो मैंने अपना कवि–धर्म पूरा किया ।[4]

सर्वेश्वर जी के जीवन संघर्षों के कारण संदेवना बहुआयामी बनकर उभरी है । कहीं निजी तनाव–दबाव है, प्रेमिल अनुभूतियाँ हैं, उनसे जन्मा दर्द, अवसाद और आत्मसंघर्ष है, कहीं सौन्दर्य का इन्द्रधनुष है तो राजनीतिक–सामाजिक स्थितियों का विकृत विगलित रूप है । कहीं जीवन की आपाधापी से छटपटाती मनस्थितियों के बिम्ब हैं । साहित्यकार सर्वेश्वर जी ने अपनी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों और नाटकों में सत्य का साक्षात रूप प्रस्तुत कर हर पाठकों के ह्रदय भाव विभोर कर दिया है । जिन्दगी के अभावों और संघर्षों ने उन्हें आक्रोशी व क्रान्तिकारी विरोधी बना दिया है । जो किसी प्रकार से अन्यायों को सहने को तैयार नहीं उन्होंने अपने गद्यो–पद्य में मध्यमवर्गीय जीवन के संघर्षों को

---

2. डॉ० हरिचरण शर्मा, सर्वेश्वर का काव्यः सृष्टि और दृष्टि, पृ० 120
3. डॉ० मुकन्द द्विवेदी, हिन्दी उपन्यास : युग चेतना और पाठकीय संवेदना, पृ० 1
4. डॉ० हरिचरण शर्मा, सर्वेश्वर का काव्य : सृष्टि और दृष्टि, पृ० 129

लेकिन मैं देखता हूँ
कि आज के जमाने में
आदमी से ज्यादा लोग
पोस्टरों को पहचानते हैं
वे आदमी से बड़े सत्य हैं ।[5]

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि ''नाटक दृश्य–काव्य है कविता को नाटक से अलग नहीं किया जा सकता है । वस्तुतः नाटकों का प्रस्फुटन जिन परिस्थितियों में हुआ, उसमें सामूहिक आंकाक्षाओं की अभिव्यक्ति के लिए गीत, संगीत, नृत्य आदि का प्रमुख हाथ रहा है । विकसित परम्परा में जीवन–दृष्टि के साथ नाटक की लयात्मकता के लिए तथा अनुभव की ऊँचाईयों की अभिव्यक्ति के लिए कविता का प्रयोग किया जाने लगा है। वर्तमान में कविता नाटक की प्रकृति में शामिल है ।''[6]

सर्वेश्वर पहले लेखक हैं जिन्होंने राजनीतिक नाटक लिखे हैं और जनवादी परम्परा को विकसित करने की पहल की है । उनके प्रमुख नाटक बकरी, लड़ाई, अब गरीबी हटाओ, हवालात, हिसाब–किताब तथा कुछ बाल नाटक लिखे जिसमें कालभात आयेगा, हाथी की पों, अनाप–शनाप, भौं–भौं खो–खो, लाख की नाक, नुक्कड़ नाटक और रेडियो नाटकों में भी अपना विशेष योगदान दिया है । सर्वेश्वर जी ने नाटकों के माध्यम से व्यापक जनसम्पर्क बनाने की कोशिश की है ।

बकरी :

सर्वेश्वर जी का सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक 'बकरी' है । 'बकरी' नाटक गान्धी जी के नाम पर देश की गरीब बेजबान जनता के शोषण का दस्तावेज है । गान्धी जी नाम को सत्ताधीशों द्वारा स्वार्थ साधन और देश की जनता को बेवकूफ बनाने तथा हर प्रकार शोषण करने का व्यापार इस हद तक जघन्य रूप धारण करता गया कि तिलमिला कर सर्वेश्वर जी ने इस नाटक की रचना की गई है । यह सत्ता की राजनीति करने वालों पर करारा व्यंग्य करता है । गांधी और गांधीवाद के नाम पर अपने ही कुकर्मों में लगे रहते हैं।

बकरी को क्या पता था मशक बनके रहेगी
अपने खिलाये फूलों से भी कुछ न कहेगी
उसके ही खूँ के रंग से इतरायेगा गुलाब ।[7]

इस देश के नेताओं का काम गांधी जी के बिना नहीं चलता यद्यपि गांधी और गान्धी के सिद्धान्तों से रत्ती भर भी सरोकार किसी को नहीं है । बल्कि उसके सिद्धान्तों के विपरीत जो कुछ है उसे ही गरिमा प्रदान करने की घटिया कोशिश निरन्तर चल रही है । इन स्वार्थी नेताओं की जुबान पर सब कुछ है सिवा सत्य के, चाहे वे सत्ता में हो या सत्ता में आने के लिए मंसूबे बना रहे हों । देश का स्वीकृत आप्तवाक्य है । 'सत्मेव जयते' के स्थान पर 'असत्यमेव जयते' में बदल दिया । गांधी जी कहा था सत्य ही ईश्वर है । परन्तु उनके ये लालची चेले असत्य ही सत्ता की माला जपते हैं ।[8] नाटक के प्रमुख पात्रों में नट, नटनी,

5. सर्वेश्वर, काठ की घंटियाँ, पृ० 382
6. डॉ० अखिलेश गोस्वामी, सर्वेश्वरः व्यक्ति और रचनाकार, पृ० 43
7. प्रदीप सौरभ, सर्वेश्वर का रचना–संसार, पृ०127
8. डॉ० अखिलेश गोस्वामी, सर्वेश्वर : व्यक्ति और रचनाकार, पृ० 205

भिश्ती, दुर्जन सिंह, कर्मवीर, सत्यवीर, विपत्ती और युवक है । कर्मवीर, दुर्जन सिंह और सिपाही ऐसे पात्र हैं । इनमें ऐसी वाचलता है, ऐसी चालाकी है ऐसी बनावटी आकृति है कि लोग इनके विश्वास में आ जाते हैं।

जा मेरी तेरी नापटनी
कैसे बनाई चटनी
गाल बजाया पेट बजाया
जबसे हुई छंटनी, जा तेरी मेरे ना पटनी
कैसी अमीरी, कैसे, गरीबी
प्यारी लगे नटनी, जा तेरी–मेरी ना पटनी ।[9]

बकरी नाटक में उन्होंने लोक गीतों की भाषा का प्रयोग किया है ।

लड़ाई :

उनका दूसरा नाटक 'लड़ाई' जो पहले कहानी के रूप में लिखा गया जो कि बहुचर्चित रहा है । आकाशवाणी की विशेष मांग पर इसका रेडियो नाटक का रूप तैयार किया गया । सर्वेश्वर जी इसे व्यापक रूप में बनाने के लिए नाट्य रूप में परिवर्तित किया । इस नाटक में चारो व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ छेड़ी गई लड़ाई को आधार बनाया ।

नाटक में सत्यव्रत न तो कोई गलत कार्य करता है और न दूसरों को करने देता है । फिर भी उसे राजनेता किस प्रकार निगल जाते इन्हीं तथ्यों को आधार बनाकर नाटक का काव्य शिल्प तैयार किया गया है । प्रारम्भ में यह घोषणा की जाती है कि देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद लड़ाई खत्म नहीं हुई है । बल्कि आलस्य जहालत, बेमानी, गरीबी, जामान्ती स्वभाव, जातिवाद, क्षेत्रीयता आदि लड़ाई अभी जारी है ।

यही तय करें आप हम सभी
गलत काम अब न करे नहीं
जो भी आये सहे उसे और कभी किसी से डरे नहीं
बदले नहीं व्यवस्था जब तक
बदले नहीं व्यवस्था जब तक
ऐसे ही लड़ना होगा
जन–जन के दिल में अपनी
आस्था से ही गड़ना होगा ।[10]

उद्देश्य की दृष्टि से नाटककार चाहता है कि समाज से असत्य छल, कपट, अनाचार, दुराचार, व्याभीचार, लूट–खसोट, घूस खोरी का जो साम्राज्य व्याप्त है वह दूर हो जाये, ऐसी प्रथा से समाज को मुक्ति मिले और हर तरफ खुशहाली फैले लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा है । नाटककार का मूल उद्देश्य तो

---

9. डॉ० कालीचरण सनेही, सर्वेश्वर और उनका साहित्य, पृ० 20
10. डॉ० अखिलेश गोस्वामी, सर्वेश्वर : व्यक्ति और रचनाकार, पृ० 211

जन–जन को जागृत करना है कोई भी नाटक जितना गांव, कस्बों, मजदूर बस्तियों और स्कूल कॉलेजों खेला जायेगा उतना ही उसका उद्देश्य पूरा होगा ।[11]

अब गरीबी हटाओ :

'अब गरीबी हटाओ' नाटक गरीबी की समस्या पर आधारित है । आज शासन तंत्र गरीबी नहीं हटा सकता इसके समूल नाश के लिए स्वयं गरीब लोगों को ही प्रयास करना होगा शासन तंत्र गरीबी समाप्त करने का प्रयास भी करे तो बीच में बाबू लोग अपनी लालची नजरें गढ़ाये रखते हैं । आम जनता तक कुछ भी नहीं पहुंच पाता है । उसे अधिकारी और चपरासी बीच में ही खा जाते हैं। कथोपकथन और संवाद योजना की दृष्टि से सर्वेश्वर जी बहुत सहज और सरल है ।

मुख्यमंत्री	:	क्या बात है ।
ग्रामीण	:	यह औरत हुजूर अपने दो बच्चों के साथ कुंए में कूद ही थी । हम लोगन ने पकड़ लिया । नहीं, जान चली जाती है ।
मुख्यमंत्री	:	क्या हुआ इसको ।
ग्रामीण	:	भूखी मरी रही थी सरकार
मुख्यमंत्री	:	क्यों?
ग्रामीण	:	कहीं काम नहीं मिलता इसे । न खेत में, न सड़क पर
मुख्यमंत्री	:	इसका आदमी?
ग्रामीण	:	वह जेहल काट रहा है ।
मुख्यमंत्री	:	क्यों?
दारोगा	:	एक हत्या का मामला था सरकार । पिछले चुनाव में शर्मा जी खिलाफ सरपंच का जो उम्मीदवार था उसका उसने रात में गढ़ासें से सिर काट दिया था।
ग्रामीण	:	बहुत गरीब है हुजूर इससे कोई काम नहीं देता है । इसको पेट पालना मुश्किल हो रहा है ।

बाल नाटक :

सर्वेश्वर जी अपने बाल साहित्य के माध्यम से पाठकों को एहसास करवाना चाहते हैं कि बच्चे जमीन की फसल हैं । उनके सपनों का संसार इसी जमीन पर है । आकाशी उड़ान के बारे में उन्होंने नन्हें पाठकों को सचेत किया बल्कि उनके भ्रमों को तोड़ा भी था । 'लाख की नाक' बाल नाटक में सर्वेश्वर ने बाल मनोविज्ञान को केन्द्र में रखकर समाज की भ्रष्ट व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है । वे इस नाटक के माध्यम से यह शिक्षा देते हैं कि नाक, मनुष्य की मर्यादा हैं । यदि एक बार मर्यादा नष्ट हो गई तो उसे पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है ।

नाक तोते की हो या खोते की,
नाक हंसते की हो या रोते की

11. प्रदीप सौरभ, सर्वेश्वर का रचना संसार, पृ० 67

नाक चेहरे का तोपखाना है,

नाक को कटने से बचाना है ।[12]

इन पंक्तियों के माध्यम से बालकों के स्वाभिमान के साथ जीने और घूस न लेने की प्रेरणा देता है । आज व्यक्ति में स्वाभिमान और ईमानदारी का अभाव देखते हैं । इसलिए उनका नट–दर्शकों की ओर संकेत करते हुए कहते हैं – सबके नकली नाक लगी है । सर्वेश्वर ने इस नाटक के विषय में लिखा है– ''यह नाटक मशीनी सभ्यता और पूर्वी सभ्यता के टकराव का नाटक है । इसे अलग–अलग उम्र के बच्चे अपनी–अपनी समझ के हिसाब के जोड़ घटाकर खेल सकते हैं ।''[13]

निष्कर्ष :

वर्तमान साहित्य को नई दिशा देने, युगजीवन की गवाह बनाने जर्जर रुढ़ियों से मुक्त संतुलित संवेदना और शिल्प में ढालने, सौन्दर्य बोध को नये प्रतिमानों से जोड़ने, जन–जीवन का सांस्कृतिक इतिहास और भूगोल प्रस्तुत करने, समसामयिक जीवन–मूल्यों की खोज करने और एक वाक्य में परिवेश और जीवन के प्रति सेचतन दृष्टि रखने वाल कवियों में सर्वेश्वर का स्थान सर्वोच्च है । उनके साहित्य में संवेदना का स्वर काफी मार्मिक है जो प्रत्येक पाठक के ह्रदय द्रवित किये बिना नहीं रह सकता है । उनके साहित्य को पढ़कर पाठक स्वयं को उस साहित्य का अभिन्न पात्र समझना शुरू कर देता है । जिसके कारण वह अधिक गहराई तक प्रभावित करता है । सर्वेश्वर का बाल साहित्य जनवादी चिन्तन की मीठी–मीठी गोलियाँ हैं जिन्हें बच्चे खुशी–खुशी खायेंगे और स्वास्थ्य लाभ भी करेंगे । इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वेश्वर जी का साहित्य उच्च श्रेणी का साहित्य है, जो हर विधा में पाठकों की रोचकता को बनाए हुए है । जो पाठकों में नीत नई जिज्ञासा उत्पन्न कर संवेदनाओं को आकार प्रदान करता है । हमारा व्यवहार भावों और संवेदनाओं का दस्तावेज है । उन्होंने अपने साहित्य में पाठकों और दर्शकों की संवेदनाओं को बांधने का प्रयास किया है ।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. डॉ० हरिचरण शर्मा, सर्वेश्वर का काव्य : सृष्टि और दृष्टि ।
2. डॉ० मुकन्द द्विवेदी, हिन्दी उपन्यासः युग चेतना और पाठकीय संवेदना।
3. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, काठ की घंटियां ।
4. डॉ० अखिलेश गोस्वामी, सर्वेश्वरः व्यक्ति और रचनाकार
5. डॉ० प्रदीप सौरभ, सर्वेश्वर का रचना–संसार
6. डॉ० कालीचरण सनेही, सर्वेश्वर और उनका साहित्य

[12]. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, लाख की नाक, पृ० 9

[13]. डॉ० कृपा शंकर पाण्डेय, सर्वेश्वर, मुक्तिबोध और अज्ञेय, पृ० 31